HISTORY

1

विजयनगर को राजधानी क्यों बनाया गया?

(Why vijaynagar was chosen as a capital?)

वे क्षेत्र, जहाँ पर विजयनगर स्थित है, ऐसा की उनकी धार्मिक परंपराओं के साथ जुड़ा हुआ था। यहाँ पर बहुत से मंदिर और बड़े-बड़े धार्मिक भवन थे जिनका इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ पर विरुपाक्ष का मंदिर है। जिसको कि राजवंश का संरक्षक माना जाता है। यहाँ पर एक प्राचीन जैन मंदिर भी है। इससे पहले पल्लव, चालुक्य, होयसल तथा चोल शासकों ने भव्य मंदिर बनवाए। उन्होंने इन मंदिरों को बहुत से अनुदान भी दिए। ऐसा दिखाई देता है की विजयनगर के शासकों ने राजधानी बनाने के लिए इस स्थान ~~का~~ का चयन इसलिए किया क्योंकि यहाँ इनके परम देवता विरुपाक्ष (शिव) और पंपा देवी (पार्वती) के मंदिर थे। विजयनगर के राजाओं की यह मान्यता थी कि वे विरुपाक्ष देवता की ही कृपा से राजा बने थे। ~~इस~~ इनके सभी शुभ कार्यों एवं राजकीय आदेशों पर कन्नड़ लिपि में "श्री विरुपाक्ष" लिखा होता था। शासक देवताओं से अपने संबंधों की प्रगाढ़ता प्रदर्शित करने के लिए शब्द ~~मंदिर~~ "हिंदू सुरत्राण" का भी प्रयोग करते थे जिसका शाब्दिक अर्थ है हिंदू ~~सुल्तान~~ ~~सुल्तान~~ सुल्तान।

विजयनगर शासक तथा व्यापारी वर्ग
(Vijaynagar Kings and Trading Class)

इस काल में युद्धों में सफलता के लिए घुड़सवार सेना का होना अति आवश्यक था। इसलिए अरब और मध्य एशिया से बढ़िया नस्ल के घोड़ों का आयात करना सभी राजाओं के लिए बहुत आवश्यक था। आरंभ में घोड़ों का व्यापारियों के हाथों में था। स्थानीय घोड़ों के व्यापारी कुदिरई चेट्टी (Kudirai chettis) भी कहा जाता था, घोड़ों आयात करने थे। 1498 ई० में उन्य ही विदेशी व्यापारी इस व्यापार में भाग ~~लेने~~ लगे लगा था। वह पुर्तगाली थे जो की भारत के पश्चिमी तट पर आकर बस गए तथा उन्होंने अपने सैनिक अड्डे और व्यापारिक केंद्र स्थापित किए। वह अपने बढ़िया सैन्य तकनीक की सहायता से दक्षिण की उस समय की इन्हीं हलचलों से भारत राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

विजयनगर भी मसालों, कपड़ा, बहुमूल्य तथा हीरे जवाहरातों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। इस काल में किसी भी वस्तु का महत्व उसके व्यापार पर निर्भर करता था।

उन नगरों के लोग बहुत समृद्ध तथा धनवान थे। वे लोग बहुत ~~कीमती~~ बहुमूल्य वस्तुएँ जैसे- हीरे रत्नों जवाहरात की प्राप्ति के बहुत इच्छुक होते थे। व्यापार से होने वाली आय साम्राज्य की आय का बहुत बड़ा भाग था।